International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 9, September- 2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

1857 की क्रांति एवं पंजाब में सैनिक विद्रोह इतिहास लेखन का एक अध्ययन

गुरप्रीत सिंह
इतिहास विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

शोध–आलेख सार

मेरठ, दिल्ली की तरह पंजाब भी एक महत्वपूर्ण स्थान था यहाँ पर भी सैनिकों की बड़ी–बड़ी छावनियां बनी हुई थी जिन पर अंग्रेज सेनापतियों का नियन्त्रण था जहां तक सेना में विद्रोह की बात है तो लगभग लाहौर फिरोजपुर, होशियारपुर, अमृतसर, सियालकोट, गुरदासपुर आदि में सैनिकों ने अपने–अपने स्तर पर छोटे समूहों में विद्रोह किया, लेकिन अंग्रेजी सरकार का सख्त रवैया होने के कारण ये ज्यादा सफल नहीं हो सका तथा समय रहते अंग्रेजों ने पंजाब पर नियन्त्रण बरकरार रखा।

मुख्य शब्द : स्वतंत्रता संग्राम, क्रांतिकारी, जमींदार, साम्राज्य ।

परिचय

1857 के समय पंजाब की एक ऐसा प्रान्त था जो समस्या का करण बना हुआ था, इसे 1849 में द्वितीय सिक्ख युद्ध के बाद अंग्रेजों ने अपने राज्य में मिला लिया था।[i] इसे मिला लेने के बाद भी अंग्रेजों की समस्या का हल नहीं हुआ, क्योंकि यह एक युद्धप्रिय लोगों का घर था। परन्तु यहां के लोग आपस में बंटे हुए थे, व इसी ईर्ष्या भरी प्रतिद्वन्द्वता के कारण शासकों ने अपने को सुरक्षित समझा था तथा यहीं पर अंग्रेजी प्रशासन को उद्देश्य नजर आता है कि दो वर्गों को एक दूसरे के द्वारा नियन्त्रण में रखना एक जाति को दूसरी जाति व एक मत को दूसरे मत के विपरीत सन्तुलित करते रहने ताकि अपने स्वार्थो की पूर्ति की जा सके [ii] और जहां तक 1857 की बात है तो पंजाब में भारी संख्या में सैनिकों की जमावट थी तथा छावनियों का निर्माण किया गया था ताकि किसी भी तरह की आपातकालीन स्थिति का सामना किया जा सके।

मेरठ और दिल्ली की खबरें 12 मई को सुबह लाहौर पहुंची जोकि रावलपिंडी के चीफ कमीश्नर को प्राप्त हुई वहां के मेरठ से पत्राचार के जरिये सारी बातों को बता दिया था पहल पत्र में लिखा ''मेरठ से सिपाही आज सुबह दिल्ली आ गये हैं तथा यहां पर आकर उन्होंने 'हडदंग' मचा दिया है।'' दूसरे पत्र मे लिखा 'विद्रोहियों ने सम्पर्क करने के सभी साधनों को काट दिया व काफी संख्या में हमारे सैनिकों तथा अफसरों को मार दिया।'' मेरठ के सिपाहियों द्वारा दिल्ली का पतन होना एक क्रांतिकारी घटना थी, इसके विषय में उत्तर भारत में गोल्डन लिखता है कि अंग्रेजों की शक्ति की कुछ समय के लिए विद्रोहियों ने पूरी तरह से नष्ट कर दिया था।''[iii]

इस संकट के समय पंजाब अकेला शान्तिपूर्ण था तथा अंग्रेजों का विश्वास पात्र था, लेकिन कुछ इतिहासकारों का मानना है कि पंजाब ने इस क्रान्ति मे अहम भूमिका निभाई।[iv]

लेकिन मिलनानी लिखता है कि इस नये प्रान्त पंजाब ने जॉन लोरेन्स के अन्तर्गत रहकर अंग्रेजों को शक्ति को दोबारा प्राप्त करने में सहायता प्रदान की।[v]

वी०सी० सुरी लिखते है, कि ''अंग्रेजो ने पंजाब में इस तरह की शासन व्यवस्था को लागू किया है कि इन आठ वर्षों में यानि पंजाब विलय के बाद कि लोगों ने इस तरह की घटना के बारे में सोचा भी नहीं था।[vi] पंजाब में पुरबिया सिपाहियों की संख्या बहुत अधिक नहीं थी, लेकिन दूसरी तरफ सिक्ख तथा पुरबियों के बीच प्रेमभाव बिल्कुल नहीं था केव बाऊन का कहना है कि, ''पुरबिया शब्द का दोबारा से जानबूझ कर प्रयोग किया गया क्योंकि वह पुरानी अपमान व घृणा को पुर्नजीवित करना चाहते थे।[vii]

चीफ कमीशनर द्वारा चर्बी वाले कारतूसों को लेकर पूरी तरह से सिपाहियों का समझाया गया कि विद्रोह करना गलत है तथा इस तरह के कारतूसों को वापिस कर दिया गया है।[viii] जॉन लोरेन्स ने अपने सहयोगी अधिकारियों को शांति बनाए रखने तथा प्रशासन के कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए

प्रोत्साहित किया, ताकि जनता का सरकार में विश्वास बना रहा तथा किसी भी तरह की अप्रिय घटना को घटने से रोका जा सके।[ix]

जॉन लोरेन्स द्वारा अपने अधिकारियों को फकीरों तथा अन्य यात्रियों पर नजर रखने को कहा गया तथा सभी सिपाहियों की गतिविधियों पर नजर रखने को कहा गया ताकि किभी भी तरह की परिस्थिति पर काबू पाया जा सके।

पंजाब में फौज के बारे में बताया गया कि यहां पर कुल 59656 सैनिक थे जिनमें से 35900 की सहानुभूति विद्रोहियों के साथ थी बाकि 23756 में से 10326 यूरोपियन सैनिक थे तथा दूसरे बचे सिक्ख सैनिक थे।[x]

यूरोपियन रैजीमैन्ट थी जिनकी सहायता से लाहौर, फिरोजपुर, होशियारपूर, अमृतसर, सियालकोट, गुरदासपुर, झेलम, पेशावर तथा मुलतान में नियन्त्रण किया जाता था तथा शासन सम्बन्ध कार्य किये जाते थे।[xi]

अगर पंजाब के अन्दर एकदम मेरठ की तरह विद्रोह होता तो ये अंग्रेजों के लिए एक बड़ा खतरा हो सकता था इसलिए 15 मई को बड़े अफसरों की एक बैठक बुलाई गई जिसमें डी०एफ० मैक्लयोड़, सी० दी० मैक्परेशन, मेजर आर्मी कर्नल, आर० लेरेन्स ए० ए० रोबर्ट लाहौर में इक्ट्ठे हुए जिन्होंने परिस्थिति पर विचार किया।[xii] अन्य बड़ी जगहों पर परेशानियों का दौर शुरू हो गया था 64वीं बैटालियन पेशावर[xiii] 39वीं बैटालियन झेलम, 45वीं बैटालियन फिरोजपुर में विरोध करना शुरू कर दिया तथा फिरोजपुर में सरकारी समान की तोड़–फोड़ शुरू कर दी।[xiv]झेलम में तभी एक बैठक बुलाई गई जिसमें 39वीं छावनी को समाप्त करके यूरोपियन रैजीमैन्ट में बदलने का निर्णय लिया गया।[xv] यह तो केवल विद्रोह की शुरूआत थी, लेकिन अंग्रेजी सरकार ने विद्रोह के लिए सही निर्णय या स्थिति बनाई तथा पुरानी खालसा सेना के सिपाहियों को धर्म का सहारा या वास्ता देकर दोबारा सेना में भर्ती किया गया ताकि अंग्रेजी राज को बचाया जा सके।[xvi]

अब ये समस्या का विषय बन गया था कि यदि सेना को निशस्त्र किया जाता तो वो विद्रोह कर सकती थी, लेकिन परिस्थिति को देखकर सेना को निशस्त्र करने का कार्य शुरू किया गया जिसका अलग–अलग हिस्सों पर अलग–अलग प्रभाव पड़ा। लाहौर में ज्यूडीशियल कमीशनर राबर्ट मौन्टगुमरी ने मुख्य सैनिक तथा असैनिक अधिकारियों को अपने विश्वास में लिया या लेकर बिग्रेडियर कोरबेट की सहायता से उसने देशी सैन्य दलों से मीया मीर में हथियार डलवाने का निश्चय किया गया।[xvii]

प्रारम्भिक योजना यह थी कि पहले उनसे गोला बारूद का सामान और अभिलाडन टोपिया को ले लिया जाए, परन्तु पुलिस के एक गैर कमीशन प्राप्त एक सिक्ख अफसर ने एक व्यापक षड्यन्त्र की सूचना दी। अतः यह निश्चय किया गया कि भारतीय सेना से पूरी तरह हथियार डलवाकर सब तरह के खतरों को हटाया जाए।

12 तारीख की रात को मिया मीर छावनी में एक नृत्य का आयोजन किया गया, जिसे सारी रात स्थगित नहीं किया गया, परन्तु सुबह जल्दी एक परेड बुलाने का निश्चय किया गया था, जिसका उद्देश्य उस समय आदेश को पढ़ना था जिसके अनुसार मेरठ में उत्पन्न संकट के बारे में बताया गया था तथा सैनिकों को अपनी बंदूकें रखने को कहा गया।[xviii]

उन्हें यह बताया गया कि बिग्रेडियर ने इसलिए हथियार रखवा लिये हैं क्योंकि बिग्रेडियर उन्हें अपने यश को बर्बाद कर देने का अवसर नहीं देना चाहता यद्यपि पहले सैनिक थोड़ा झिझके, परन्तु परेड के खत्म होने पर 16वीं, 26वीं, 49वीं देशी पैदल सेना तथा 8वीं देशी घुड़सवार सेना ने आज्ञाकारिता के साथ अपने हथियारों का ढेर लगा दिया[xix] व हथियार डलवाने का कार्य बिना किसी दुर्घटना के समाप्त हो गया। केव बाऊन का कहना, 'इस प्रकार 600 यूरोपियन लोगों के सामने 2500 देशी सिपाही निहत्थे कर दिए गये और वे आपेक्षित रूप से बिना हानि के अपनी पंक्तियों में चले गए।[xx]

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 9, September- 2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

राईस होलमस इस दृश्य को देखकर विसमय होकर कहता है कि, ''इससे अधिक निर्णायक विजय कभी प्राप्त नहीं हुई है'' [xxi] मौन्टगुमरी का निर्णय बहुत महत्वूपर्ण था क्योंकि इसने न केवल पंजाब की राजधानी को बचाया, बल्कि अंग्रेजी राज्य को भी सुरक्षित रखने में सहायता की। यदि लाहौर के अन्दर विद्रोहियों द्वारा बगावत हो जाती तो, पंजाब का भी इसमें भाग लेना लगभग तय था जिसका एक भयानक प्रभाव पंजाब में हर जगह देखने को मिलता।[xxii] केव बाऊन लिखता है कि–

''लौहार मे सेना के हथियार रखवाना खेल का प्रथम चरण था जिसने पंजाब की राजधानी को सुरक्षित किया नाकि सारे भारत को।[xxiii]

दूसरा कार्य गोबिन्दगढ़ में किय गया जिसकी कमान में अमृतसर था और जो सिक्खों का पवित्र नगर था। यह भी लाहौर जितना ही महत्त्वपूर्ण था तथा इसकी सहायता से आसपास के इलाकों में शांति बनाई जा सकती थी तथा साथ–साथ लोगों की गतिविधियों पर भी नजर रखी जा सकती थी। महामहिम साम्राज्ञी की 18वीं सेना कैप्टन शिचेस्टर की अधीनता में लाहौर से 12 तारीख की रात को चली तथा दूसरे दिन प्रातः सूर्य उदय से पहले गोबिन्दगढ़ पहुंची, उन्हें शांतिपूर्ण किले के अन्दर जाने दिया गया व इसी कारण अधिकारियों को सिक्खों का पवित्र नगर होने के कारण अधिक चिन्ता नहीं उठानी पड़ी।[xxiv] क्योंकि ज्यादातर लोग शान्तिपूर्ण थे। लेकिन लाहौर में जो सेना निशस्त्र थी। वो एकदम उग्र हो उठी तथा 26वीं देशी पैदल सेना के सैनिकों ने 30 जुलाई को अपने अफसरों पर आक्रमण कर दिया तथा बाद में रावी नदी की तरफ भाग गये, कैप्टन फैडरिक कपूर ने विद्रोही सेना के विय कमान सम्भाली 50 लोगों अमृतसर में रावी नदी पार करते हुए मारा 282 को अजलाना गांव में पकड़ा। 1 अगस्त 1857 को 237 लोगों को गोलियों से मारा, 45 लोगों को अगले दिन मार दिया गया, 42 लोगों को और पकड़ा गया जिन्हें लम्बी सजाएं मिली। इन 282 लोगों के मृत परिवार को कैप्टन कपूर ने वहां के जमादारों को कहा कि इन्हें, कबाडें में गेर दें।[xxv] फिरोजपुर की भी स्थिति इतनी आसान नहीं थी। 10वीं देशी घुड़सवार सेना के अलावा

देशी पैदल, सेना की दो रैजीमैन्टों 45वीं तथा 57वीं भी वहां पड़ाव डाले हुए थी तथा इन पर भी लगातार अधिकारियों की नजर टिकी हुई थी।[xxvi] 10वीं घुड़सवार सेना की राजभक्ति के सम्बन्ध में कोई संदेह नहीं था और पैदल सेना की रैजीमैन्ट में 57वीं देशी पैदल सेना सबसे विद्रोही समझी जाती थी।[xxvii] बिग्रेड में अंग्रेजों की पैदल तोपखाने की दो कम्पनियों 1 लाईट फील्ड बैटरी और दूसरी महामहिम सामग्री की 61 वीं रैजीमैन्ट थी। मोंटगुमरी ने फिरोजपुर के अधिकारियों को मेरठ और संकट के सम्बन्ध में तथा पंजाब में हिन्दुस्तानियों के द्वारा सम्भावित विद्रोह के सम्बन्ध में चेतावनी दी थी, ब्रिगेडियर इनस को भी जिसने दो दिन पहले ही इस सैनिक स्थान का कार्यभार संभाला था, को भी संकट का पता था परन्तु सेना के समादेशक अधिकारियों को इसकी कोई भनक नहीं थी।[xxviii] इनस ने देशी पैदल सेना की दोनों रैजीमन्टों को अलग–अलग रखने व फिर अलग–अलग करके उनसे हथियार डलवाने का निश्चय किया था, 57वीं रैजीमैन्ट तो आज्ञानुसार शिवर में चली गई, परन्तु 45वीं रैजीमैन्ट ने अपने लिए निश्चित मैदान के लिए एक सीधा रास्ता लिया व उन्होंने यूरोपियन सैनिकों और तोपखाने की नई हलचल को देखा। जिसके सम्बन्ध में कुछ भी जानने की उनसे आशा नहीं की जा सकती थी। अचानक दंगा है कि पुकार उठी और करबी 200 सिपाही प्राचीरों की दौड़े और शेष दूसरी ओर चले गये।[xxix] गैर कमीशन प्राप्त सिक्ख सैनिकों ने मोन्टूगुमरी को सचना दी थी 15 तारीख को लाहौर गोबिन्दगढ़ फिरोजपुर जालन्धर तथा कांगड़ा में एक साथ विद्रोह होगा। इनमें केवल 200 आदमियों ने गदर किया। 57वीं देशी पैदल सेना उस रात पूर्णतया शान्त रही, दूसरे दिन सुबह लाईट कम्पनी हथियार डाल दिये और अपनी पंक्तियों में लौट गये, इसके थोड़ी देर बाद यूरोपियन सैन्य दलों के एक वर्ग की पंक्ति को साफ करने का आदेश दिया गया।[xxx] जिससे 57वीं देशी पैदल सेना के शेष सिपाहियों ने सोचा कि लाईट कम्पनी को निहत्था करवा देने के बाद उन्हे बंदी बना लिया गया है। संध्या के समय सूचना देने वाले अधिकारी ने उनसे अनुरोध किया कि वे यूरोपियन पंक्तियों मे चले गये तथा अपने हथियार डाल दे।[xxxi] 45वीं पैदल देशी सेना रैजीमैन्ट ने 130 सिपाहियों को छोड़कर

सैनिक स्थान को छोड़ दिया, उनका पीछा किया गया तथा उन्हें तितर बितर कर दिया गया और उन्हें बन्दी बना दिया गया। कुछ को गांव वालों ने पकड़ लिया और फिर वे सैनिक स्थान में लाये गये। शेष दिल्ली चले गये जहां उन्होंने विद्राहियों की संख्या को बढ़ाया तथा 10वीं देशी घुड़सवार सेना अन्त तक राजभक्त बना रही।[xxxii]

जालन्धर में 61वीं और 36वीं पैदल सेना पर मेरठ तथा लखनऊ के साथ पहले के सम्बन्ध के कारण उन पर संदेह किया गया जब करीब एक वर्ष पहले 16वीं रैजीमैन्ट लखनऊ चली गई थी तो सैनिक स्थान विद्रोह के संक्रमण से मुक्त हो गया था परन्तु भय यह था कि अब भी उनका सम्पर्क उनके भूतपूर्व मित्रों, बरहामपुर बैरकपुर में 16वीं तथा 35वीं रैजीमैन्टों से बना हुआ था।[xxxiii] क्योंकि अधिकत्तर बाहरी सैनिक स्थानों पर यूरोपियन सैनिक दल बिल्कुल नहीं थे और वे बिल्कुल सिपाहियों की कृपा आश्रित थे।[xxxiv]

परन्तु युद्ध नीति से महत्पपूर्ण स्थान फिललौर पर यूरोपियन सैनिकों को रख दिया था और कपूरथला के राजा ने जालन्धर की रक्षा के लिए अपने सैन्य दलों को भेज दिय था ब्रिगेडियर तथा कमीशनर ने दो सिपाही रैजीमैन्टों के हथियार डलवाने का निश्चय कर लिया था और वे केवल एक अनुकूल अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। सैनिकों में विद्रोही लक्षण होने के कारण दो बार 3 जून व 4 जून की तारीखों को बदल दिया गया था।[xxxv]

लेकिन 7 जून को उन्होंने अपने मालिकों का पूर्वानुमान करके विद्रोह कर दिया। फिललौर दुर्ग सेना का जो भारतीय भाग था उनसे मिल गया और वे लुधियाना के तरफ भाग गये।[xxxvi] जहां उनका कुछ प्रतिरोध हथियारों से किया गया। वे वहां अधिक देर नहीं ठहरे तथा दिल्ली के अपने मार्ग पर चल दिये। परन्तु शहर में उनका कुछ देर के लिए दिखाई पड़ना इस बात का द्योतक था कि अंग्रेजी सैनिक पंजाबी सिक्ख ग्रामीणों के स्नेह पर कितना निर्भर रह सकते थे आग लगाना, हत्या अपना, मार्ग में लूटपाट करना,

मवेशियों को उठा ले जाना और डकैती एकदम शुरू हो गई कुछ अपराधी जब पकड़ लिये जाते तो वे सीधेपन से अपने बुरे चाल चलन का कारण बताते और अपराध स्वीकार करते हुए कहते थे कि उन्होंने तो यह समझा कि अंग्रेजी राज्य को समाप्त हो गया है।[xxxvii]

मैजिस्ट्रेट ने कानून तोड़ने वाले के खिलाफ कड़ी कारवाई की शहर पर जुर्माने के तौर पर एक दण्ड कर लगा दिया गया और उसकी आबादी को निहत्था कर दिया गया क्योंकि उन्होंने अपने हथियार को कानून की रक्षा के लिए प्रयुक्त नहीं किये थे, लेकिन जो विद्रोही बच गए वो अब सतलुज नदी के पास पहुंचे लुधियाना के डिप्टी कमिशनर ने उनको रोकने का प्रयत्न किया और जब वो नदी के पास हो गये तो उन्होंने अपने आप को कहीं छुपा लिया।[xxxviii]

अन्त में निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि मेरठ, दिल्ली की तरह पंजाब भी एक महत्त्वपूर्ण स्थान था यहां पर भी सैनिकों की बड़ी–बड़ी छावनियां बनी हुई थी जिन पर अंग्रेज सेनापतियों का नियन्त्रण था जहां तक सेना में विद्रोह की बात तो लगभग लाहौर फिरोजपुर, होशियारपुर, अमृतसर, सियालकोट, गुरदासपुर आदि में सैनिकों ने अपने–अपने स्तर पर छोटे समूहों में विद्रोह किया, लेकिन अंग्रेजी सरकार का सख्त रवैया होने के कारण ये ज्यादा सफल नहीं हो सका तथा समय रहते अंग्रेजों ने पंजाब पर नियन्त्रण बरकरार रखा।

संदर्भ

[i] गेरहन, द सिक्ख, पृ० 210

[ii] एस० एन० सेन, 1857, पृ० 385

[iii] गोरडन, द सिक्ख, पृ० 210

[iv] हरि सिंह, बोपारी, 1857 का विद्रोह एवं पंजाब के सिक्खों का योगदान, पृ० 19

[v] एन०एम० खिलनानी, पंजाब अन्डर द लोरेन्स, पृ० 136

[vi] वी०एस० सूरी, पंजाब एण्ड द ग्रेट खिलिलट 1857 पंजाब पास्ट एण्ड परजैन्ट – भाग–2, पृ० 229

[vii] केव बाऊन, द पंजाब एण्ड द दिल्ली इन 1857, भाग 1, पृ० 41

[viii] चीफ कमीशनर द कर्नल एडवर्ड मई 1857 पेशावर नं० 51, पंजाब सरकार रिर्कोड

[ix] चीफ कमीशनर की पंजाब के सभी अधिकारियों को सूचना, रावपिंडी, पंजाब सरकार रिर्कोड

[x] एन०एम० खिलनानी, पंजाब अन्डर द लोरेन्स, पृ० 136

[xi] वी०एन० सूरी, पंजाब पास्ट एण्ड परजैण्ट, पृ० 230

[xii] फोरन सिकरेट कनशेलशसन, 15 मई 1857

[xiii] पंजाब म्यूटनी रिर्कोड, भाग–8

[xiv] फोरन सिकरेट विभाग फाईल नं० 2, 17 मई, 1857

[xv] एच०बी० एडवर्ड कमीशनर टू चीफ कमीशनर पंजाब फाईल नं० 13

[xvi] पंजाब टू गर्वनमेंट ऑफ इण्डिया, फोरेन सिक्ररेट फाइल नं० 2, 17 मई 1857

[xvii] केव बाऊन, पंजाब एण्ड द दिल्ली इन 1857, भाग–1, पृ० 93–95

[xviii] एस०एन० सेन, 1857, पृ० 386

[xix] पंजाब म्यूटनी रिर्पोट, भाग 8, पृ० 227

[xx] केव ब्राऊन, पंजाब एण्ड द दिल्ली इन 1857, भाग–1, पृ० 99

[xxi] टी०आर० होलम्स, हिस्ट्री ऑफ द इण्डियना म्यूटनी, पृ० 315

[xxii] म्यूटनी रिर्कोड, भाग–8, पृ० 330

[xxiii] केव बाऊन, पंजाब एण्ड द दिल्ली इन 1857, भाग–1, पृ० 101

[xxiv] एस०एन० सेन, 1857, पृ० 387

[xxv] अैफ० सी० कोचर, द काइसिस इन पंजाब, पृ० 162–63

[xxvi] खुशवन्त सिंह, ए हिस्ट्री ऑफ द सिक्ख, भाग–2, पृ० 107–08

[xxvii] हरि सिंह बोपारी, रिवोल्ट ओफ 1857 इन पंजाब एण्ड रोल ओफ द सिक्ख, पृ० 19

[xxviii] एस०एन० सेन, 1857, पृ० 387

[xxix] केव बाऊन, पंजाब पंजाब एण्ड द दिल्ली इन 1857, भाग–1, पृ० 107

[xxx] उपरोक्त, पृ० 109–110

[xxxi] म्यूटनी रिर्कोड, भाग–8, पृ० 51

[xxxii] एस०एन० सेन, 1857, पृ० 387

[xxxiii] रमेश चन्द्र मजूमदार, सिपोय ए मियटनी एण्ड द रिवोल्ट आफ 1857, पृ० 94

[xxxiv] चालर्स बैल, द हिस्ट्री ऑफ इण्डियन म्यूटनी, पृ० 409

[xxxv] उपरोक्त, पृ० 416

[xxxvi] एस० एन० सेन, 1857, पृ० 388

[xxxvii] टी० आर० होलम्स ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटनी पृ० 330

[xxxviii] उपरोक्त, पृ० 335